भारतीय नवजागरण और कहानीकार प्रेमचन्द

रूपरेखा

प्राक्कथन **i-iv**

प्रथम अध्याय : 1—35

भूमिका :

(क) विषय प्रवेश एवं शोध की सार्थकता

(ख) कहानी का अर्थ , परिभाषा एव स्वरूप विवेचन

(ग) भारतीय नवजागरण की धारणा और ऐतिहासिक संदर्भ

द्वितीय अध्याय : 36—66

भारतीय नवजागरण की विकास प्रक्रिया : अर्थ एवं स्वरूप

(क) अंग्रेजी—शिक्षा की नीति

(ख) सामाजिक जागरण

(ग) राजनीतिक जागरण

(घ) धार्मिक जागरण

(च) आर्थिक जागरण

तृतीय अध्याय : 67—93

भारतीय नवजागरण के प्रमुख सुधारात्मक आन्दोलन :

(क) ब्रह्म समाज

(ख) प्रार्थना समाज

(ग) आर्य समाज

(घ) थियोसोफिकल सोसायटी

(च) रामकृष्ण मिशन

समन्वित विवेचन

चतुर्थ अध्याय : 94—118

प्रेमचन्द का जीवन परिचय

(क) व्यक्तित्व :

(i) बाह्य व्यक्तित्व

(ii) आन्तरिक व्यक्तित्व

(ख) कृत्तित्व

समन्वित विवेचन

पंचम अध्याय : 119—198

प्रेमचन्द की कहानियों में भारतीय नवजागरण नकारात्मक अभिव्यक्ति

1. बाल—विवाह निषेध
2. अनमेल—विवाह निषेध
3. बहु—विवाह निषेध
4. दहेज—प्रथा की आलोचना
5. रिश्वत—खोरी की आलोचना
6. धार्मिक पाखण्ड़ों की आलोचना
7. जाति—गत भेदभावों की आलोचना
8. शराब इत्यादि दुर्व्यसनों की आलोचना
9. परदा—प्रथा की आलोचना

षष्ठ अध्याय : 199—319

प्रेमचन्द की कहानियों में भारतीय नवजागरण की सकारात्मक अभिव्यक्ति :

1 पुनरूत्थानवादी रूप :

(क) वेश्या—उद्धार

(ख) अछुतोद्धार

2. मातृ—भूमि के प्रति प्रेम
3. स्वतंत्रता की भावना :

(क) स्वराज्य की भावना

(ख) सत्याग्रह की भावना

(ग) असहयोग आन्दोलन की भावना

4. नारी के विविध रूप

(क) नारी पतिव्रता के रूप में

(ख) सुशिक्षिता

(ग) नारी एक प्रेरक के रूप में

5. विधवा–विवाह का समर्थन

6. अन्तरजातीय–विवाह का समर्थन

7. मानवतावाद

सप्तम् अध्याय : **320–375**

आर्थिक शोषण

1. जमींदार वर्ग द्वारा शोषण

2. जमींदार के सहायकों द्वारा शोषण

3. कुटीर–उद्योगों का ठप्प होना

4. सरकार द्वारा शोषण

5. शोषक वर्ग द्वारा गरीबों का शोषण

6. महाजन द्वारा शोषण

7. आपसी ईर्ष्या–द्वेष तथा प्राकृतिक आपदायें

अष्टम अध्याय : **376–401**

उपसंहार

ग्रन्थानुक्रमणिका **402–408**